चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम.....दैनिक जागरण.....

दिनांक 15.8.2020 पृष्ठ संख्या.....4.....कॉलम.....4-8.....

खेती की लागत को कम कर रही जीवाणु खाद

जागरण संवाददाता, हिसार : चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के सूक्ष्म जीव विज्ञान विभाग के जीवाणु खाद उत्पादक एवं प्रौद्योगिकी केंद्र (सेंटर ऑफ बायो फर्टिलाइजर प्रोडक्शन एवं टेक्नोलॉजी) का सोमवार को डिप्टी स्पीकर रणबीर गंगवा ने निरीक्षण किया। उन्होंने कहा कि यूरिया, डीएपी तथा कीटनाशकों के विकल्प के रूप में जीवाणु खाद खेती की लागत को कम करती है। इससे किसानों की आमदनी और जमीन की उपजाऊ शक्ति भी बढ़ रही है। इसलिए किसान अधिक से अधिक किसानों को जीवाणु खाद का इस्तेमाल करें।

लैब विशेषज्ञों ने बताया कि एफपीओ हैबिटेट के साथ हुए समझौते के अंतर्गत यहां तैयार किए जा रहे जीवाणु खाद से बीजों को उपचारित किया जाता है। इसके अलावा कई किसान फसलों की सिंचाई के दौरान पानी के साथ भी इस खाद का उपयोग करते हैं। यूरिया खाद पर होने वाले 500 रुपये के खर्च के बंदले केवल 150 रुपये की ज़ीवाणु खाद अधिक कारगर साबित हो रही है। जिले के अनेक किसान इस खाद का उपयोग अपने खेत में कर रहे हैं। साथ ही अपने खर्च को कम करते हुए जमीन की उपजाऊ शक्ति को बढ़ा रहे हैं। उन्होंने कहा कि किसान जीवाणु खाद को अपनाकर न केवल 5 से 10 फीसद फसल की पैदावार में बढ़ोतरी कर सकते हैं, बल्कि जीवाणु खाद के उपयोग से 15-25 फीसद तक रासायनिक खादों के उपयोग में बचत तथा मिट्टी की पैदावार क्षमता में वृद्धि कर सकते हैं। डिप्टी स्पीकर ने पादव जैव प्रौद्योगिकी केंद्र का भी दौरा किया। इस दौरान वीसी प्रो. समर सिंह, पूर्व विधायक रामचंद्र कंबोज आदि पदाधिकारी उपस्थित रहे।

हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में जीवाणु खाद उत्पादक एवं प्रौद्योगिकी केंद्र का निरीक्षण करते डिप्टी स्पीकर रणबीर सिंह गंगवा। साथ में वीसी प्रो . समर सिह। ● डीआइपीआरओ

कुछ वर्षों में जीवाणु खाद के उत्पादन में हुई है वृद्धि

पिछले 2 वर्षों में इस केंद्र ने लगभग 6 लाख लीटर जीवाणु खाद का उत्पादन व बिक्री की है और इस वर्ष यह लक्ष्य 10 लाख लीटर तक पहुंचाना है। अभी हाल के दिनों में जीवाणु खाद की बिक्री के लिए हमारे विश्वविद्यालय, हैफेड तथा हैबिटेट जिनोम ने करार साइन किया है, ताकि जीवाणु खाद अधिक से अधिक किसानों को उपलब्ध कराई जा सके।

विज्ञानियों से संपर्क बनाएं

हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. समर सिंह ने कहा कि विश्वविद्यालय निरंतर किसानों के हितों को ध्यान में रखकर ही शोध कार्य कर रहा है। मौजूदा समय में खराब हुई कपास की फसल को लेकर भी विश्वविद्यालय के विज्ञानियों ने प्रदेश के विभिन्न क्षेत्रों का दौरा कर इसके कारणों को जाना है। उन्होंने कहा कि किसान विश्वविद्यालय के विज्ञानियों से लगातार संपर्क बनाए रखें और अपनी फसलों में सिफारिश किए गए कीटनाशकों का ही प्रयोग करें।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार

लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम ....पंजाब केसरी..........

दिनांक 15.9.2020 पृष्ठ संख्या ....3.... कॉलम ....3-8....

खेती की लागत को कम कर रही जीवाणु खाद, अधिक से अधिक किसान करें इस्तेमाल

डिप्टी स्पीकर रणबीर सिंह गंगवा ने किया हकृवि के जीवाणु खाद प्लांट का निरीक्षण

हिसार, 14 सितम्बर (ब्यूरो): यूरिया, डी.ए.पी. तथा कीटनाशकों के विकल्प के रूप में जीवाणु खाद खेती की लागत को कम करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है। इससे किसानों की आमदनी और जमीन की उपजाऊ शक्ति भी बढ़ रही है। अधिक से अधिक किसानों को जीवाणु खाद का इस्तेमाल करना चाहिए। यह बात डिप्टी स्पीकर रणबीर सिंह गंगवा ने सोमवार को हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के सूक्ष्म जीव विज्ञान विभाग के जीवाणु खाद उत्पादक एवं प्रौद्योगिकी केंद्र (सैंटर ऑफ बायो फर्टिलाइजर प्रोडक्शन एवं टैक्नोलॉजी) का निरीक्षण करते हुए कही। इस दौरान रतिया के पूर्व विधायक रामचंद्र कंबोज, हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. समर सिंह, हरियाणा पिछड़ा वर्ग आयोग के पूर्व चेयरमैन सतबीर सिंह वर्मा भी मौजूद थे।

डिप्टी स्पीकर ने बायो-फर्टीलाइजर लैब का निरीक्षण करते हुए यहां चल रही गतिविधियों की जानकारी ली। लैब विशेषज्ञों ने इस लैब से किसानों को मिल रहे लाभ के बारे में विस्तार से जानकारी दी। उन्होंने बताया कि एफ.पी.ओ. हैबीटेट के साथ हुए समझौते के अंतर्गत यहां तैयार किए जा रहे जीवाणु खाद से बीजों को उपचारित किया जाता है। इसके अलावा कई किसान फसलों की सिंचाई के दौरान पानी के साथ भी इस खाद का उपयोग करते हैं। यूरिया खाद पर होने वाले 500 रुपए के खर्च के बदले केवल 150 रुपए की जीवाणु खाद अधिक कारगर साबित हो रही है।

एच.ए.यू. में जीवाणु खाद उत्पादक एवं प्रौद्योगिकी केंद्र का निरीक्षण करते डिप्टी स्पीकर रणबीर सिंह गंगवा।

इस अवसर पर विश्वविद्यालय के कुलसचिव डॉ. बी.आर. कंबोज, अनुसंधान निदेशक डॉ. एस.के. सहरावत, कृषि उपनिदेशक डॉ. बलवंत सहारण, एडवोकेट सुभाष कुंडू, मौलिक विज्ञान एवं मानविकी महाविद्यालय के अधिष्ठाता डॉ. राजवीर सिंह, सूक्ष्म जीव विज्ञान विभाग के अध्यक्ष डॉ. राजेश गेरा, डॉ. बलजीत सहारण, डॉ. राकेश कुमार, डॉ. पुष्पा खरब, हैबिटेट जिनोम इंप्रूवमैंट प्राइमरी प्रोड्यूसर कंपनी लिमिटेड के अध्यक्ष सतीश सहरावत, डॉ. सुभाष काजला, जगदीश प्रसाद सहित विश्वविद्यालय के अनेक अधिकारी व कर्मचारी मौजूद थे।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम....दैनिक भास्कर....

दिनांक 15.9.2020 पृष्ठ संख्या....2.... कॉलम....6-8....

यूरिया पर ₹500 खर्च की बजाय केवल ₹150 की जीवाणु खाद अधिक कारगर

गंगवा ने जीवाणु खाद प्लांट का किया दौरा, डॉ बलजीत ने दी जानकारी

भास्कर न्यूज | हिसार

हरियाणा विधानसभा के डिप्टी स्पीकर रणबीर सिंह गंगवा ने कहा कि यूरिया, डीएपी और कीटनाशकों के विकल्प के रूप में जीवाणु खाद खेती की लागत को कम करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है। इससे किसानों की आमदनी और जमीन की उपजाऊ शक्ति बढ़ रही है। अधिक से अधिक किसानों को जीवाणु खाद का इस्तेमाल करना चाहिए। डिप्टी स्पीकर रणबीर सिंह गंगवा ने यह बात सोमवार को हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के सूक्ष्म जीव विज्ञान विभाग के जीवाणु खाद उत्पादक एवं प्रौद्योगिकी केंद्र (सेंटर ऑफ बायो फर्टिलाइजर प्रोडक्शन एवं टेक्नोलॉजी) का निरीक्षण करते हुए कही।

इस दौरान प्रभारी डॉ. बलजीत सहारण ने बताया कि एफपीओ हैबीटेट के साथ हुए समझौते के अंतर्गत यहां तैयार किए जा रहे जीवाणु खाद से बीजों को उपचारित किया जाता है। कई किसान फसलों की सिंचाई के दौरान पानी के साथ भी इस खाद का उपयोग करते हैं। यूरिया खाद पर होने वाले 500 रुपये के खर्च के बदले केवल 150 रुपये की जीवाणु खाद अधिक कारगर साबित हो रही है। जिला के अनेक किसान इस खाद का उपयोग अपने खेत में कर रहे हैं और अपने खर्च को कम करते हुए जमीन की उपजाऊ शक्ति को बढ़ा रहे हैं। डिप्टी स्पीकर ने कहा कि कृषि वैज्ञानिकों को रोगमुक्त कपास की खेती के लिए अधिक शोध करना चाहिए। उन्होंने कहा कि किसान जीवाणु खाद का इस्तेमाल धीरे-धीरे बढ़ाकर डीएपी व यूरिया खाद की खपत में कमी कर सकते हैं।

जीवाणु खाद उत्पादक एवं प्रौद्योगिकी केंद्र का निरीक्षण करते डिप्टी स्पीकर रणबीर गंगवा।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम........अमर उजाला........

दिनांक 15.9.2020 पृष्ठ संख्या.....4.....कॉलम.....6-8.....

खेती की लागत को कम कर रही जीवाणु खाद, इसका अधिक इस्तेमाल करें : गंगवा

विधानसभा उपाध्यक्ष ने किया हकृवि के जीवाणु खाद प्लांट का निरीक्षण

अमर उजाला ब्यूरो

हिसार। हरियाणा विधानसभा के उपाध्यक्ष रणबीर सिंह गंगवा ने कहा कि यूरिया, डीएपी और कीटनाशकों के विकल्प के रूप में जीवाणु खाद खेती की लागत को कम करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है। इससे किसानों की आमदनी और जमीन की उपजाऊ शक्ति भी बढ़ रही है। अधिक से अधिक किसानों को जीवाणु खाद का इस्तेमाल करना चाहिए। उन्होंने ने यह बात सोमवार को हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के सूक्ष्म जीव विज्ञान विभाग के जीवाणु खाद उत्पादक एवं प्रौद्योगिकी केंद्र (सेंटर ऑफ बायो फर्टिलाइजर प्रोडक्शन एवं टेक्नोलॉजी) का निरीक्षण करते हुए कही। इस दौरान रतिया के पूर्व विधायक रामचंद्र कंबोज, हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. समर सिंह, हरियाणा पिछड़ा वर्ग आयोग के पूर्व चेयरमैन सतबीर सिंह वर्मा भी मौजूद थे।

उपाध्यक्ष ने बायो-फर्टीलाइजर लैब का निरीक्षण कर यहां चल रही गतिविधियों की जानकारी ली। लैब विशेषज्ञों ने इस लैब से किसानों को मिल रहे लाभ के बारे में विस्तार से जानकारी दी। उन्होंने बताया कि एफपीओ हैबीटेट के साथ हुए समझौते के अंतर्गत यहां तैयार किए जा रहे जीवाणु खाद से बीजों को उपचारित किया जाता है। इसके अलावा कई किसान फसलों की सिंचाई के दौरान पानी के साथ भी इस खाद का उपयोग करते हैं। यूरिया खाद पर होने वाले 500 रुपये के खर्च के बदले केवल 150 रुपये की जीवाणु खाद अधिक कारगर साबित हो रही है।

गंगवा ने विश्वविद्यालय स्थित पादव जैव प्रौद्योगिकी केंद्र का भी दौरा किया और वैज्ञानिकों से वहां उपयोग की जाने वाली तकनीकों के बारे में जानकारी हासिल की।

इस अवसर पर पिछड़ा वर्ग आयोग के पूर्व चेयरमैन सतबीर सिंह वर्मा, एडवोकेट सुभाष कुंडू, सरपंच लीलूराम, सरपंच राकेश गांधी, सरपंच सतपाल सिंह, सरपंच संदीप कुमार, सरपंच विनोद मान, मंडल अध्यक्ष बलजीत फौगाट, राजकीय महाविद्यालय हिसार के प्रोफेसर डॉ. निहाल सिंह चाहर, डॉ. विवेक सैनी, मीडिया प्रभारी डॉ. सुखबीर सिंह दूहन, एनएसएस प्रभारी डॉ. अशोक श्योराण, डॉ. राजेंद्र सेवदा, डॉ. मनोज कुमार, प्रो राजकुमार, प्रो. रमेश आर्य, डॉ. पूनम सांगवान, नरेंद्र, अजय, रमेश आर्य, सुशील वर्मा आदि उपस्थित थे।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम ....पंजाब केसरी दिल्ली....

दिनांक 15. 9. 202... पृष्ठ संख्या ...—... कॉलम ...—...

खेती की लागत को कम कर रही जीवाणु खाद, अधिक से अधिक किसान करें इस्तेमाल : गंगवा

डिप्टी स्पीकर रणबीर गंगवा ने किया हकृवि के जीवाणु खाद प्लांट का निरीक्षण

हिसार, 14 सितम्बर (राज पराशर): हरियाणा विधानसभा के डिप्टी स्पीकर रणबीर गंगवा ने कहा कि यूरिया, डीएपी तथा कीटनाशकों के विकल्प के रूप में जीवाणु खाद खेती की लागत को कम करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है। इससे किसानों की आमदनी और जमीन की उपजाऊ शक्ति भी बढ़ रही है। अधिक से अधिक किसानों को जीवाणु खाद का इस्तेमाल करना चाहिए।

डिप्टी स्पीकर रणबीर गंगवा ने यह बात आज हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के सूक्ष्म जीव विज्ञान विभाग के जीवाणु खाद उत्पादक एवं प्रौद्योगिकी केंद्र (सेंटर ऑफ बायो फर्टिलाइजर प्रोडक्शन एवं टैक्नोलॉजी) का निरीक्षण करते हुए कही। इस दौरान रतिया के पूर्व विधायक रामचंद्र कंबोज, हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. समर सिंह, हरियाणा पिछड़ा वर्ग आयोग के पूर्व चेयरमैन सतबीर सिंह वर्मा भी मौजूद थे। डिप्टी

हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में पादप जैव प्रौद्योगिकी केंद्र का निरीक्षण करते डिप्टी स्पीकर रणबीर गंगवा। (छाया : राज पराशर)

स्पीकर ने बायो-फर्टीलाइजर लैब का निरीक्षण करते हुए यहां चल रही गतिविधियों की जानकारी ली। लैब विशेषज्ञों ने इस लैब से किसानों को मिल रहे लाभ के बारे में विस्तार से जानकारी दी। उन्होंने बताया कि एफपीओ हैबीटेट के साथ हुए समझौते के अंतर्गत यहां तैयार किए जा रहे जीवाणु खाद से बीजों को उपचारित किया जाता है। इसके अलावा कई किसान फसलों की सिंचाई के दौरान पानी के साथ भी इस खाद का उपयोग करते हैं। यूरिया खाद पर होने वाले 500 रुपए के खर्च के बदले केवल 150 रुपए की जीवाणु खाद अधिक कारगर साबित हो रही है। जिला के अनेक किसान इस खाद का उपयोग अपने खेत में कर रहे हैं और अपने खर्च को कम करते हुए जमीन की उपजाऊ शक्ति को बढ़ा रहे हैं। डिप्टी स्पीकर ने कहा कि हिसार की कृषि भूमि कपास की खेती के अनुकूल है और यह जिला का सौभाग्य है कि यहां कृषि विश्वविद्यालय है। उन्होंने कहा कि कृषि वैज्ञानिकों को रोगमुक्त कपास की खेती के लिए अधिक शोध करना चाहिए।

उन्होंने विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. समर सिंह से आह्वान किया कि वे मौजूदा समय में किसान की खराब हुई फसल को ध्यान में रखकर विश्वविद्यालय में शोध कार्यों पर बढ़ावा दें।

हकृवि के कुलपति प्रो. समर सिंह ने कहा कि विश्वविद्यालय निरंतर किसानों के हितों को ध्यान में रखकर ही शोध कार्य कर रहा है। मौजूदा समय में खराब हुई नरमा कपास की फसल को लेकर भी विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों ने प्रदेश के विभिन्न क्षेत्रों का दौरा कर इसके कारणों को जाना है। इस अवसर पर विश्वविद्यालय के कुलसचिव डॉ. बीआर कंबोज, एडवोकेट सुभाष कुंडू सहित विश्वविद्यालय के अनेक अधिकारी व कर्मचारी मौजूद थे।

समाचार पत्र का नाम ...नभ छोर...
दिनांक 14.9.2020 पृष्ठ संख्या ...—... कॉलम ...—...

जीवाणु खाद खेती की लागत को कम करने में महत्वपूर्ण : गंगवा

हिसार/14 सितंबर/रिपोर्टर

विधानसभा के डिप्टी स्पीकर रणबीर सिंह गंगवा ने कहा कि यूरिया, डीएपी तथा कीटनाशकों के विकल्प के रूप में जीवाणु खाद खेती की लागत को कम करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है। इससे किसानों की आमदनी और जमीन की उपजाऊ शक्ति भी बढ़ रही है। अधिक से अधिक किसानों को जीवाणु खाद का इस्तेमाल करना चाहिए। उन्होंने यह बात आज हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के सूक्ष्म जीव विज्ञान विभाग के जीवाणु खाद उत्पादक एवं प्रौद्योगिकी केंद्र (सेंटर ऑफ बायो फर्टिलाइजर प्रोडक्शन एवं टैक्नोलॉजी) का निरीक्षण करते हुए कही। इस दौरान रतिया के पूर्व विधायक रामचंद्र कंबोज, हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. समर सिंह, हरियाणा पिछड़ा वर्ग आयोग के पूर्व चेयरमैन सतबीर सिंह वर्मा भी मौजूद थे। डिप्टी स्पीकर ने बायो फर्टीलाइजर लैब का निरीक्षण करते हुए यहां चल रही गतिविधियों की जानकारी ली। लैब विशेषज्ञों ने बताया कि एफपीओ हैबीटेट के साथ हुए समझौते के अंतर्गत यहां तैयार किए जा रहे जीवाणु खाद से बीजों को उपचारित किया जाता है। इसके अलावा कई किसान फसलों की सिंचाई के दौरान पानी के साथ भी इस खाद का उपयोग करते हैं। यूरिया खाद पर होने वाले 500 रुपये के खर्च के बदले केवल 150 रुपये की जीवाणु खाद अधिक कारगर साबित हो रही है। जिला के अनेक किसान इस खाद का उपयोग अपने खेत में कर रहे हैं और अपने खर्च को कम करते हुए जमीन की उपजाऊ शक्ति को बढ़ा रहे हैं। डिप्टी स्पीकर ने कहा कि हिसार की कृषि भूमि कपास की खेती के अनुकूल है और यह जिला का सौभाग्य है कि यहां कृषि विश्वविद्यालय है। उन्होंने कहा कि कृषि वैज्ञानिकों को रोगमुक्त कपास की खेती के लिए अधिक शोध करना चाहिए। उन्होंने कहा कि किसान जीवाणु खाद का इस्तेमाल धीरे-धीरे बढ़ाकर डीएपी व यूरिया खाद की खपत में कमी कर सकते हैं। जीवाणु खाद का इस्तेमाल करके यूरिया की कमी को पूरा किया जा सकता है। उन्होंने कहा कि किसान जीवाणु खाद को अपनाकर न केवल 5 से 10 प्रतिशत फसल की पैदावार में बढ़ौतरी कर सकते हैं, बल्कि जीवाणु खाद के उपयोग से 15-25 प्रतिशत तक रासायनिक खादों के उपयोग में बचत तथा मिट्टी की पैदावार क्षमता में वृद्धि कर सकते हैं। इसके उपरांत डिप्टी स्पीकर ने विश्वविद्यालय स्थित पादव जैव प्रौद्योगिकी केंद्र का भी दौरा किया और वैज्ञानिकों से वहां उपयोग की जाने वाली तकनीकों के बारे में जानकारी हासिल की। उन्होंने कुलपति प्रो. समर सिंह से आह्वान किया कि वे मौजूदा समय में किसान की खराब हुई फसल को ध्यान में रखकर विश्वविद्यालय में शोध कार्यों पर बढ़ावा दें। प्राकृतिक आपदा व अन्य कारणों से किसान की फसल पूरी तरह तबाह हो जाती है, जिससे किसान की आर्थिक स्थिति पर विपरीत असर पड़ता है। इसलिए ऐसी किस्मों व तकनीकों को बढ़ाएं ताकि किसानों का भला हो सके।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार

लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम........नित्य शक्ति टाइम्स........

दिनांक 15.9.2020......पृष्ठ संख्या......—......कॉलम......—......

खेती की लागत को कम कर रही जीवाणु खाद अधिक से अधिक किसान करें इस्तेमाल : गंगवा

डिप्टी स्पीकर रणबीर सिंह गंगवां ने किया हकृवि के जीवाणु खाद प्लांट का निरीक्षण

नित्य शक्ति टाइम्स न्यूज

हिसार। हरियाणा विधानसभा के डिप्टी स्पीकर रणबीर सिंह गंगवा ने कहा कि यूरिया, डीएपी तथा कीटनाशकों के विकल्प के रूप में जीवाणु खाद खेती की लागत को कम करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है। इससे किसानों की आमदनी और जमीन की उपजाऊ शक्ति भी बढ़ रही है। अधिक से अधिक किसानों को जीवाणु खाद का इस्तेमाल करना चाहिए।

डिप्टी स्पीकर रणबीर सिंह गंगवा ने यह बात आज हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के सूक्ष्म जीव विज्ञान विभाग के जीवाणु खाद उत्पादक एवं प्रौद्योगिकी केंद्र (सेंटर ऑफ बायो फर्टिलाइजर प्रोडक्शन एवं टेक्नोलॉजी) का निरीक्षण करते हुए कही। इस दौरान रतिया के पूर्व विधायक रामचंद्र कंबोज, हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. समर सिंह, हरियाणा पिछड़ा वर्ग आयोग के पूर्व चेयरमैन सतबीर सिंह वर्मा भी मौजूद थे।

डिप्टी स्पीकर ने बायो-फर्टीलाइजर लैब का निरीक्षण करते हुए यहां चल रही गतिविधियों की जानकारी ली। लैब विशेषज्ञों ने इस लैब से किसानों को मिल रहे लाभ के बारे में विस्तार से जानकारी दी। उन्होंने बताया कि एफपीओ हैबीटेट के साथ हुए समझौते के अंतर्गत यहां तैयार किए जा रहे जीवाणु खाद से बीजों को उपचारित किया जाता है। इसके अलावा कई किसान फसलों की सिंचाई के दौरान पानी के साथ भी इस खाद का उपयोग करते हैं। यूरिया खाद पर होने वाले 500 रुपये के खर्च के बदले केवल 150 रुपये की जीवाणु खाद अधिक कारगर साबित हो रही है। जिला के अनेक किसान इस खाद का उपयोग अपने खेत में कर रहे हैं और अपने खर्च को कम करते हुए जमीन की उपजाऊ शक्ति को बढ़ा रहे हैं।

डिप्टी स्पीकर ने कहा कि हिसार की कृषि भूमि कपास की खेती के अनुकूल है और यह जिला का सौभाग्य है कि यहां कृषि विश्वविद्यालय है। उन्होंने कहा कि कृषि वैज्ञानिकों को रोगमुक्त कपास की खेती के लिए अधिक शोध करना चाहिए। उन्होंने कहा कि किसान जीवाणु खाद का इस्तेमाल धीरे-धीरे बढ़ाकर डीएपी व यूरिया खाद की खपत में कमी कर सकते हैं। जीवाणु खाद का इस्तेमाल करके यूरिया की कमी को पूरा किया जा सकता है। इसके उपरांत डिप्टी स्पीकर ने विश्वविद्यालय स्थित पादप जैव प्रौद्योगिकी केंद्र का भी दौरा किया और वैज्ञानिकों से वहां उपयोग की जाने वाली तकनीकों के बारे में जानकारी हासिल की। उन्होंने विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. समर सिंह से आहवान किया कि वे मौजूदा समय में किसान की खराब हुई फसल को ध्यान में रखकर विश्वविद्यालय में शोध कार्यों पर बढ़ावा दें।

यह रहे मौजूद

इस अवसर पर विश्वविद्यालय के कुलसचिव डॉ. बी.आर. कंबोज, अनुसंधान निदेशक डॉ. एस.के. सहरावत, कृषि उपनिदेशक डॉ. बलवंत सहारण, एडवोकेट सुभाष कुंडू, मौलिक विज्ञान एवं मानविकी महाविद्यालय के अधिष्ठाता डॉ. राजबीर सिंह, सूक्ष्म जीव विज्ञान विभाग के अध्यक्ष डॉ. राजेश गेरा, डॉ. बलजीत सहारण, डॉ. राकेश कुमार, डॉ. पुष्पा खरब, हैबिटेट जिनोम इंप्रूवमेंट प्राइमरी प्रोड्यूसर कंपनी लिमिटेड के अध्यक्ष सतीश सहरावत, डॉ. सुभाष काजला, जगदीश प्रसाद सहित विश्वविद्यालय के अनेक अधिकारी व कर्मचारी मौजूद थे।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम........पांच बजे........

दिनांक 14.9.2020 पृष्ठ संख्या.......—....... कॉलम.......—.......

डिप्टी स्पीकर रणबीर सिंह गंगवा ने किया हकृवि के जीवाणु खाद प्लांट का निरीक्षण

खेती की लागत को कम कर रही जीवाणु खाद, अधिक से अधिक किसान करें इस्तेमाल : गंगवा

पांच बजे न्यूज

हिसार। हरियाणा विधानसभा के डिप्टी स्पीकर रणबीर सिंह गंगवा ने कहा कि यूरिया, डीएपी तथा कीटनाशकों के विकल्प के रूप में जीवाणु खाद खेती की लागत को कम करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है। इससे किसानों की आमदनी और जमीन की उपजाऊ शक्ति भी बढ़ रही है। अधिक से अधिक किसानों को जीवाणु खाद का इस्तेमाल करना चाहिए।

डिप्टी स्पीकर रणबीर सिंह गंगवा ने यह बात आज हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के सूक्ष्म जीव विज्ञान विभाग के जीवाणु खाद उत्पादक एवं प्रौद्योगिकी केंद्र (सेंटर ऑफ बायो फर्टिलाइजर प्रोडक्शन एवं टेक्नोलॉजी) का निरीक्षण करते हुए कही। इस दौरान नलवा के पूर्व विधायक रामचंद्र कंबोज, हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. समर सिंह, हरियाणा पिछड़ा वर्ग आयोग के पूर्व चेयरमैन सतबीर सिंह वर्मा भी मौजूद थे।

डिप्टी स्पीकर ने बायो-फर्टीलाइजर लैब का निरीक्षण करते हुए यहां चल रही गतिविधियों की जानकारी ली। लैब विशेषज्ञों ने इस लैब से किसानों को मिल रहे लाभ के बारे में विस्तार से जानकारी दी। उन्होंने बताया कि एफपीओ हैफेड के साथ हुए समझौते के अंतर्गत यहां तैयार किए जा रहे जीवाणु खाद से बीजों को उपचारित किया जाता है। इसके अलावा कई किसान फसलों की सिंचाई के दौरान पानी के साथ भी इस खाद का उपयोग करते हैं। यूरिया खाद पर होने वाले 500 रुपये के खर्च के बदले केवल 150 रुपये की जीवाणु खाद अधिक कारगर साबित हो रही है। जिला के अनेक किसान इस खाद का उपयोग अपने खेत में कर रहे हैं और अपने खर्च को कम करते हुए जमीन की उपजाऊ शक्ति को बढ़ा रहे हैं।

डिप्टी स्पीकर ने कहा कि हिसार की कृषि भूमि कपास की खेती के अनुकूल है और यह जिला का सौभाग्य है कि यहां कृषि विश्वविद्यालय है। उन्होंने कहा कि कृषि वैज्ञानिकों को रोगमुक्त कपास की खेती के लिए अधिक शोध करना चाहिए। उन्होंने कहा कि किसान जीवाणु खाद का इस्तेमाल धीरे-धीरे बढ़ाकर डीएपी व यूरिया खाद की खपत में कमी कर सकते हैं। जीवाणु खाद का इस्तेमाल करके यूरिया की कमी को पूरा किया जा सकता है। उन्होंने कहा कि हकृवि के वैज्ञानिकों द्वारा किसानों की फसल की पैदावार बढ़ाने के लिए हर संभव प्रयास किए जा रहे हैं। इसके लिए विश्वविद्यालय की ओर से नई-नई तकनीकों व किस्मों को विकसित किया जा रहा है। इसी कड़ी में फसलों के लिए वैज्ञानिकों द्वारा तैयार जीवाणु खाद को तैयार किया जाना महत्वपूर्ण कदम है। उन्होंने कहा कि किसान जीवाणु

खाद को अपनाकर न केवल 5 से 10 प्रतिशत फसल की पैदावार में बढ़ोतरी कर सकते हैं, बल्कि जीवाणु खाद के उपयोग से 15-25 प्रतिशत तक रासायनिक खादों के उपयोग में बचत तथा मिट्टी की पैदावार क्षमता में वृद्धि कर सकते हैं। इसके उपरांत डिप्टी स्पीकर ने विश्वविद्यालय स्थित पादप जैव प्रौद्योगिकी केंद्र का भी दौरा किया और वैज्ञानिकों से वहां उपयोग की जाने वाली तकनीकों के बारे में जानकारी हासिल की। उन्होंने विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. समर सिंह से आह्वान किया कि वे मौजूदा समय में किसान की खराब हुई फसल को ध्यान में रखकर विश्वविद्यालय में शोध कार्यों पर बढ़ावा दें। प्राकृतिक आपदा व अन्य कारणों से किसान की फसल पूरी तरह तबाह हो जाती है, जिससे किसान की आर्थिक स्थिति पर विपरीत असर पड़ता है। इसलिए ऐसी किस्मों व तकनीकों को बढ़ाएं ताकि किसानों का भला हो सके।

हकृवि के कुलपति प्रो. समर सिंह ने कहा कि विश्वविद्यालय निरंतर किसानों के हितों को ध्यान में रखकर ही शोध कार्य कर रहा है। मौजूदा समय में खराब हुई नरमा कपास की फसल को लेकर भी विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों ने प्रदेश के विभिन्न क्षेत्रों का दौरा कर इसके कारणों को जाना है। उन्होंने कहा कि किसान विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों से लगातार संपर्क बनाए रखें और अपनी फसलों में सिफारिश किए गए कीटनाशकों का ही प्रयोग करें। बिना सिफारिश किए गए कीटनाशकों के प्रयोग से कई बार किसान की फसल नष्ट हो जाती है और उन्हें आर्थिक नुकसान झेलना पड़ता है।

सूक्ष्म जीव विज्ञान विभाग के अध्यक्ष डॉ. राजेश गेरा ने बताया कि सूक्ष्म जीव विज्ञान विभाग का जीवाणु खाद उत्पादक एवं प्रौद्योगिकी केंद्र पिछले 50 वर्षों से जीवाणु खाद का उत्पादन व बिक्री कर रहा है। हमारा विभाग मुख्यतः सभी फसलों के लिए जीवाणु खाद तैयार कर रहा है जैसे कि एग्जोटिका, फास्फोटीका, राइजोटीका एवं बायोटिका प्रमुख है। इसके लिए वर्ष 1986 में हमारे विभाग को राष्ट्रीय उत्पादकता परिषद, नई दिल्ली की ओर से राष्ट्रीय उत्पादकता पुरस्कार से सम्मानित किया गया। इस केंद्र का मुख्य उद्देश्य किसानों को जहर मुक्त खेती के लिए प्रेरित करना, किसानों को जीवाणु खाद के प्रति जागरूक, प्रशिक्षित एवं उपयोग करना, जीवाणु खाद का उत्पादन व न्यूनतम मूल्य पर वितरित करना है। बायोफर्टिलाइजर्स के दैनिक उत्पादन को बढ़ाने के लिए केंद्र ने प्रति 200 लीटर की क्षमता के तीन फरमेंटर को स्थापित किया है। इसके अलावा जीवाणु खाद के बॉटलिंग के लिए एक अर्धस्वचालक भरने और सील करने की मशीन को भी सेटअप किया गया है। उन्होंने बताया कि पिछले कुछ वर्षों में जीवाणु खाद के उत्पादन व बिक्री में काफी वृद्धि हुई है। पिछले 2 वर्षों में इस केंद्र ने लगभग 6 लाख लीटर जीवाणु खाद का उत्पादन व बिक्री की है और इस वर्ष यह लक्ष्य 10 लाख लीटर तक पहुंचाना है। अभी हाल के दिनों में जीवाणु खाद की बिक्री के लिए हमारे विश्वविद्यालय, हैफेड तथा हिंस्टेट जिनोम ने करार साइन किया है ताकि जीवाणु खाद अधिक से अधिक किसानों को उपलब्ध कराई जा सके।

इस अवसर पर विश्वविद्यालय कुलसचिव डॉ. बीआर कंबोज, अनुसंधान निदेशक डॉ. एसके सहरावत, कृषि उपनिदेशक डॉ. बलवंत सहारण, एडवोकेट सुभाष कुंडू, मौलिक विज्ञान एवं मानविकी महाविद्यालय के अधिष्ठाता डॉ. राजवीर सिंह, सूक्ष्म जीव विज्ञान विभाग के अध्यक्ष डॉ. राजेश गेरा, डॉ. बलजीत सहारण, डॉ. राकेश कुमार, डॉ. पुष्पा खरब, हिस्टेट जिनोम ईयूक्वॉट प्राइमरी प्रोड्यूसर कंपनी लिमिटेड के अध्यक्ष सतीश सहरावत, डॉ. सुभाष काजला, जगदीश प्रसाद सहित विश्वविद्यालय के अनेक अधिकारी व कर्मचारी मौजूद थे।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार

लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम....जग मार्ग....

दिनांक 14. 9. 2020 पृष्ठ संख्या....—....कॉलम....—....

खेत में जीवाणु खाद का अधिक इस्तेमाल करें किसान: गंगवा

डिप्टी स्पीकर ने किया हकृवि के जीवाणु खाद प्लांट का निरीक्षण

जगमार्ग न्यूज

हिसार। हरियाणा विधानसभा के डिप्टी स्पीकर रणबीर सिंह गंगवा ने कहा है कि यूरिया, डीएपी तथा कीटनाशकों के विकल्प के रूप में जीवाणु खाद खेती की लागत को कम करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है। इससे किसानों की आमदनी और जमीन की उपजाऊ शक्ति भी बढ़ रही है। अधिक से अधिक किसानों को जीवाणु खाद का इस्तेमाल करना चाहिए।

डिप्टी स्पीकर रणबीर सिंह गंगवा हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के सूक्ष्म जीव विज्ञान विभाग के जीवाणु खाद उत्पादक एवं प्रौद्योगिकी केंद्र (सेंटर ऑफ बायो फर्टीलाइजर प्रोडक्शन एवं टेक्नोलॉजी) का निरीक्षण कर रहे थे। इस दौरान रतिया के पूर्व विधायक रामचंद्र कंबोज व हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. समर सिंह भी मौजूद थे। डिप्टी स्पीकर ने बायो-फर्टीलाइजर लैब का निरीक्षण करते हुए यहां चल रही गतिविधियों की जानकारी ली। लैब विशेषज्ञों ने इस लैब से किसानों को मिल रहे लाभ के बारे में विस्तार से जानकारी दी। उन्होंने बताया कि एफपीओ हैबीटेट के साथ हुए समझौते के अंतर्गत यहां तैयार किए जा रहे जीवाणु खाद से बीजों को उपचारित किया जाता है। इसके अलावा कई किसान फसलों की सिंचाई के दौरान पानी के साथ भी इस खाद का उपयोग करते हैं। यूरिया खाद पर होने वाले 500 रुपए के खर्च के बदले केवल 150 रुपए की जीवाणु खाद अधिक कारगर साबित हो रही है। जिला के अनेक किसान इस खाद का उपयोग अपने खेत में कर रहे हैं और अपने खर्च को कम करते हुए जमीन की उपजाऊ शक्ति को बढ़ा रहे हैं। डिप्टी स्पीकर ने कहा कि हिसार की कृषि भूमि कपास की खेती के अनुकूल है और यह जिला का सौभाग्य है कि यहां कृषि विश्वविद्यालय है। उन्होंने कहा कि कृषि वैज्ञानिकों को रोगमुक्त कपास की खेती के लिए अधिक शोध करना चाहिए।

जीवाणु खाद उत्पादक एवं प्रौद्योगिकी केंद्र का निरीक्षण करते डिप्टी स्पीकर रणबीर सिंह गंगवा।

डीएपी व यूरिया खाद की खपत में कर सकते हैं कमी

उन्होंने कहा कि किसान जीवाणु खाद का इस्तेमाल धीरे-धीरे बढ़ाकर डीएपी व यूरिया खाद की खपत में कमी कर सकते हैं। जीवाणु खाद का इस्तेमाल करके यूरिया की कमी को पूरा किया जा सकता है।

उन्होंने कहा कि हकृवि के वैज्ञानिकों द्वारा किसानों की फसल की पैदावार बढ़ाने के लिए हर संभव प्रयास किए जा रहे हैं। इसके लिए विश्वविद्यालय की ओर से नई-नई तकनीकों व किस्मों को विकसित किया जा रहा है। इसी कड़ी में फसलों के लिए वैज्ञानिकों द्वारा तैयार जीवाणु खाद को तैयार किया जाना महत्वपूर्ण कदम है।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम....सिटी पल्स....

दिनांक 14.9.2020 पृष्ठ संख्या.......—.......कॉलम.......—.......

जीवाणु खाद खेती की लागत को कम करने में निभा रही है महत्वपूर्ण भूमिकाः गंगवा

डिप्टी स्पीकर रणबीर सिंह गंगवा ने किया हकृवि के जीवाणु खाद प्लांट का निरीक्षण

सिटी पल्स न्यूज, हिसार। हरियाणा विधानसभा के डिप्टी स्पीकर रणबीर सिंह गंगवा ने कहा कि यूरिया, डीएपी तथा कीटनाशकों के विकल्प के रूप में जीवाणु खाद खेती की लागत को कम करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है। इससे किसानों की आमदनी और जमीन की उपजाऊ शक्ति भी बढ़ रही है। अधिक से अधिक किसानों को जीवाणु खाद का इस्तेमाल करना चाहिए। गंगवा ने यह बात आज हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के सूक्ष्म जीव विज्ञान विभाग के जीवाणु खाद उत्पादक एवं प्रौद्योगिकी केंद्र (सेंटर ऑफ बायो फर्टिलाइजर प्रोडक्शन एवं टेक्नोलॉजी) का निरीक्षण करते हुए कही।

हिसार। हकृवि में जीवाणु खाद उत्पादक एवं प्रौद्योगिकी केंद्र का निरीक्षण करते डिप्टी स्पीकर रणबीर सिंह गंगवा।

डिप्टी स्पीकर ने बायो-फर्टीलाइजर लैब का निरीक्षण करते हुए यहां चल रही गतिविधियों की जानकारी ली। लैब विशेषज्ञों ने इस लैब से किसानों को मिल रहे लाभ के बारे में विस्तार से जानकारी दी। उन्होंने बताया कि एफपीओ हैबीटेट के साथ हुए समझौते के अंतर्गत यहां तैयार किए जा रहे जीवाणु खाद से बीजों को उपचारित किया जाता है।

हकृवि के कुलपति प्रो. समर सिंह ने कहा कि विश्वविद्यालय निरंतर किसानों के हितों को ध्यान में रखकर ही शोध कार्य कर रहा है। मौजूदा समय में खराब हुई नरमा कपास की फसल को लेकर भी विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों ने प्रदेश के विभिन्न क्षेत्रों का दौरा कर इसके कारणों को जाना है। उन्होंने कहा कि किसान विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों से लगातार संपर्क बनाए रखें और अपनी फसलों में सिफारिश किए गए कीटनाशकों का ही प्रयोग करें। बिना सिफारिश किए गए कीटनाशकों के प्रयोग से कई बार किसान की फसल नष्ट हो जाती है और उन्हें आर्थिक नुकसान झेलना पड़ता है।

इस अवसर पर विश्वविद्यालय के कुलसचिव डॉ. बी.आर. कंबोज, अनुसंधान निदेशक डॉ. एस.के. सहरावत, कृषि उपनिदेशक डॉ. बलवंत सहारण, एडवोकेट सुभाष कुंडू, मौलिक विज्ञान एवं मानविकी महाविद्यालय के अधिष्ठाता डॉ. राजबीर सिंह, सूक्ष्म जीव विज्ञान विभाग के अध्यक्ष डॉ. राजेश गेरा, डॉ. बलजीत सहारण, डॉ. राकेश कुमार, डॉ. पुष्पा खरब सहित विश्वविद्यालय के अनेक अधिकारी व कर्मचारी मौजूद थे।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम........हिसार टुडे........

दिनांक 14-9-2020....पृष्ठ संख्या.......—.......कॉलम.......—.......

खेती की लागत को कम कर रही जीवाणु खाद, अधिक से अधिक किसान करें इस्तेमाल : गंगवा

डिप्टी स्पीकर रणबीर सिंह गंगवा ने किया हकृवि के जीवाणु खाद प्लांट का निरीक्षण

टुडे न्यूज | हिसार

हरियाणा विधानसभा के डिप्टी स्पीकर रणबीर सिंह गंगवा ने कहा कि यूरिया, डीएपी तथा कीटनाशकों के विकल्प के रूप में जीवाणु खाद खेती की लागत को कम करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है। इससे किसानों की आमदनी और जमीन की उपजाऊ शक्ति भी बढ़ रही है। अधिक से अधिक किसानों को जीवाणु खाद का इस्तेमाल करना चाहिए।

डिप्टी स्पीकर रणबीर सिंह गंगवा ने यह बात आज हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के सूक्ष्म जीव विज्ञान विभाग के जीवाणु खाद उत्पादक एव प्रौद्योगिकी केंद्र (सेंटर ऑफ बायो फर्टिलाइजर प्रोडक्शन एवं टेक्नोलॉजी) का निरीक्षण करते हुए कही। इस दौरान रतिया के पूर्व विधायक रामचंद्र कंबोज, हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. समर सिंह, हरियाणा पिछड़ा वर्ग आयोग के पूर्व चेयरमैन सतबीर सिंह वर्मा भी मौजूद थे। डिप्टी स्पीकर ने बायो-फर्टीलाइजर लैब का निरीक्षण करते हुए यहां चल रही गतिविधियों की जानकारी ली। लैब विशेषज्ञों ने इस लैब से किसानों को मिल रहे लाभ के बारे में विस्तार से जानकारी दी। उन्होंने बताया कि एफपीओ हैबीटेट के साथ हुए समझौते के अंतर्गत यहां तैयार किए जा रहे जीवाणु खाद से बीजों को उपचारित किया जाता है। इसके अलावा कई किसान फसलों की सिंचाई के दौरान पानी के साथ भी इस खाद का उपयोग करते हैं। यूरिया खाद पर होने वाले 500 रुपये के खर्च के बदले केवल 150 रुपये की जीवाणु खाद अधिक कारगर साबित हो रही है। जिला के अनेक किसान इस खाद का उपयोग अपने खेत में कर रहे हैं और अपने खर्च को कम करते हुए जमीन की उपजाऊ शक्ति को बढ़ा रहे हैं। डिप्टी स्पीकर ने कहा कि हिसार की कृषि भूमि कपास की खेती के अनुकूल है और यह जिला का सौभाग्य है कि यहां कृषि विश्वविद्यालय है। उन्होंने कहा कि कृषि वैज्ञानिकों को रोगमुक्त कपास की खेती के लिए अधिक शोध करना चाहिए। उन्होंने कहा कि किसान जीवाणु खाद का इस्तेमाल धीरे-धीरे बढ़ाकर डीएपी व यूरिया खाद की खपत में कमी कर सकते हैं। जीवाणु खाद का इस्तेमाल करके यूरिया की कमी को पूरा किया जा सकता है।

हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में जीवाणु खाद उत्पादक एवं प्रौद्योगिकी केंद्र का निरीक्षण करते डिप्टी स्पीकर रणबीर सिंह गंगवा।

उन्होंने कहा कि हकृवि के वैज्ञानिकों द्वारा किसानों की फसल की पैदावार बढ़ाने के लिए हर संभव प्रयास किए जा रहे हैं। इसके लिए विश्वविद्यालय की ओर से नई-नई तकनीकों व किस्मों को विकसित किया जा रहा है। इसी कड़ी में फसलों के लिए वैज्ञानिकों द्वारा तैयार जीवाणु खाद को तैयार किया जाना महत्वपूर्ण कदम है। उन्होंने कहा कि किसान जीवाणु खाद को अपनाकर न केवल 5 से 10 प्रतिशत फसल की पैदावार में बढ़ोतरी कर सकते हैं, बल्कि जीवाणु खाद के उपयोग से 15-25 प्रतिशत तक रासायनिक खादों के उपयोग में बचत तथा मिट्टी की पैदावार क्षमता में वृद्धि कर सकते हैं। इसके उपरांत डिप्टी स्पीकर ने विश्वविद्यालय स्थित पादप जैव प्रौद्योगिकी केंद्र का भी दौरा किया और वैज्ञानिकों से वहां उपयोग की जाने वाली तकनीकों के बारे में जानकारी हासिल की। उन्होंने विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. समर सिंह से आह्वान किया कि वे मौजूदा समय में किसान की खराब हुई फसल को ध्यान में रखकर विश्वविद्यालय में शोध कार्यों पर बढ़ावा दें। प्राकृतिक आपदा व अन्य कारणों से किसान की फसल पूरी तरह तबाह हो जाती है, जिससे किसान की आर्थिक स्थिति पर विपरीत असर पड़ता है। इसलिए ऐसी किस्मों व तकनीकों को बढ़ाएं ताकि किसानों का भला हो सके। हकृवि के कुलपति प्रो. समर सिंह ने कहा कि विश्वविद्यालय निरंतर किसानों के हितों को ध्यान में रखकर ही शोध कार्य कर रहा है। मौजूदा समय में खराब हुई नरमा कपास की फसल को लेकर भी विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों ने प्रदेश के विभिन्न क्षेत्रों का दौरा कर इसके कारणों को जाना है। उन्होंने कहा कि किसान विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों से लगातार संपर्क बनाए रखें और अपनी फसलों में सिफारिश किए गए कीटनाशकों का ही प्रयोग करें। बिना सिफारिश किए गए कीटनाशकों के प्रयोग से कई बार किसान की फसल नष्ट हो जाती है और उन्हें आर्थिक नुकसान झेलना पड़ता है। सूक्ष्म जीव विज्ञान विभाग के अध्यक्ष डॉ. राजेश गेरा ने बताया कि सूक्ष्म जीव विज्ञान विभाग का जीवाणु खाद उत्पादक एवं प्रौद्योगिकी केंद्र पिछले 50 वर्षों से जीवाणु खाद का उत्पादन व बिक्री कर रहा है। हमारा विभाग मुख्यतः सभी फसलों के लिए जीवाणु खाद तैयार कर रहा है जैसे कि एग्जोटिका, फास्फोटीका, राइजोटीका एवं बायोटिका प्रमुख है। इसके लिए वर्ष 1986 में हमारे विभाग को राष्ट्रीय उत्पादकता परिषद, नई दिल्ली की ओर से राष्ट्रीय उत्पादकता पुरस्कार से सम्मानित किया गया। इस केंद्र का मुख्य उद्देश्य किसानों को जहर मुक्त खेती के लिए प्रेरित करना, किसानों को जीवाणु खाद के प्रति जागरूक, प्रशिक्षित एवं उपयोग करना, जीवाणु खाद का उत्पादन व न्यूनतम मूल्य पर वितरित करना है। बायोफर्टिलाइजर्स के दैनिक उत्पादन को बढ़ाने के लिए केंद्र ने प्रति 200 लीटर की क्षमता के तीन फरमेंटर को स्थापित किया है। इसके अलावा जीवाणु खाद के बॉटलिंग के लिए एक अर्धचालक भरने और सील करने की मशीन को भी सेटअप किया गया है।

उन्होंने बताया कि पिछले कुछ वर्षों में जीवाणु खाद के उत्पादन व बिक्री में काफी वृद्धि हुई है। पिछले 2 वर्षों में इस केंद्र ने लगभग 6 लाख लीटर जीवाणु खाद का उत्पादन व बिक्री की है और इस वर्ष यह लक्ष्य 10 लाख लीटर तक पहुंचाना है। अभी हाल के दिनों में जीवाणु खाद की बिक्री के लिए हमारे विश्वविद्यालय, हैफेड तथा हैबिटेट जिनोम ने करार साइन किया है ताकि जीवाणु खाद अधिक से अधिक किसानों को उपलब्ध कराई जा सके। इसका पूरा श्रेय हमारे कुलपति प्रोफेसर समर सिंह एवं अन्य अधिकारीगण हो जाता है जिनके सहयोग की वजह से यह सब संभव हो सका।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम......दैनिक जागरण......

दिनांक 15.9.2020 पृष्ठ संख्या......4......कॉलम......2-6......

वेबिनार | महाराणा प्रताप बागवानी विश्वविद्यालय में मशरूम विषय पर तीन दिवसीय ऑनलाइन प्रशिक्षण का समापन

कम लागत में अधिक मुनाफा देता है मशरूम : प्रो. समर

जागरण संवाददाता, हिसार : बागवानी में विविधिकरण के रूप में मशरूम एक ऐसा व्यवसाय है, जो कम धन से शुरू किया जा सकता है और सफल होने पर मशरूम उत्पादन को किसी भी स्तर पर बढ़ाया जा सकता हैं। यह बात चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. समर सिंह ने कही।

वह महाराणा प्रताप बागवानी विश्वविद्यालय करनाल के क्षेत्रीय खुंभ अनुसंधान केंद्र मुरथल की ओर से राष्ट्रीय कृषि उच्च शिक्षा परियोजना के तहत आयोजित तीन दिवसीय आनलाइन प्रशिक्षण शिविर के समापन अवसर पर प्रतिभागियों को बतौर मुख्यातिथि ऑनलाइन संबोधित कर रहे थे।

यह प्रशिक्षण शिविर खुंभ उत्पादन, प्रोसेसिंग व विपणन को लेकर आयोजित किया गया। प्रो. समर सिंह ने कहा कि इस प्रशिक्षण कार्यक्रम के प्रतिभागी अधिक से अधिक लाभ उठाएं और अपनी समस्याओं का समाधान भी विज्ञानियों से प्राप्त करें। साथ ही मशरूम के उत्पादन, विपणन व भंडारण के बारे में भी अधिक से अधिक जानकारी हासिल कर स्वरोजगार स्थापित करें। महाराणा प्रताप बागवानी विश्वविद्यालय (एमएचयू) करनाल के कुलसचिव डा. अजय सिंह ने कुलपति का स्वागत किया। प्रशिक्षण के प्रतिभागियों को सफलतापूर्वक प्रशिक्षण पर बधाई दी।

हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. समर सिंह। ● जागरण आर्काइव

देशभर से 87 प्रतिभागी हुए शामिल

एमएचयू के अनुसंधान निदेशक डा. रमेश गोयल ने बताया कि इस प्रशिक्षण शिविर में देशभर से 87 प्रतिभागियों ने हिस्सा लिया। इनमें पंजाब, हरियाणा व पश्चिमी उत्तर प्रदेश के विद्यार्थी, युवा, किसान एवं उद्यमी शामिल थे। भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के मशरूम अनुसंधान निदेशालय, सोलन के वरिष्ठ विज्ञानियों डा. वीपी शर्मा, डा. श्वेत कमल, डा. सुधीर, डा. अनुपम, एनआइएफटीईमए, सोनीपत के विज्ञानियों डा. अनुराग, राष्ट्रीय बागवानी बोर्ड के उपनिदेशक डा. सुरेंद्र सिंह व पंजाब कृषि विश्वविद्यालय, लुधियाना के विज्ञानी डा. शिवानी ने मशरूम से जुड़े विभिन्न विषयों पर अपने व्याख्यानों से प्रतिभागियों को अवगत करवाया। इसके अलावा प्रतिभागियों को मशरूम उद्योग, उसके उत्पादन, नई तकनीक, नई प्रजातियों, मशरूम फार्म डिजाइन आदि के बारे में बेहतरीन ढंग से जानकारी मुहैया करवाई गई।

मशरूम को बनाएं टेबल फूड

समर सिंह ने कहा कि मशरूम खाने में स्वादिष्ट होने के साथ-साथ सेहत के लिए भी बहुत फायदेमंद है। इसलिए मौजूदा समय में मशरूम को एक टेबल फूड बनाने की जरूरत है, ताकि घर-घर तक इसका उपयोग हो सके। उन्होंने कहा कि हमारे देश में अभी इसका उपयोग प्रति व्यक्ति बहुत कम है, जबकि नीदरलैंड व चीन में इसका उपयोग बहुत ज्यादा है। उन्होंने प्रतिभागियों से आह्वान किया कि वे वर्तमान समय में विकसित नई प्रजातियों की जानकारी हासिल कर इस क्षेत्र में व्यवसाय स्थापित करें।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम पंजाब केसरी

दिनांक 15.9.2020 पृष्ठ संख्या 2 कॉलम 6-8

कम लागत में अधिक मुनाफा देता है मशरूम : प्रो. समर सिंह

■ 3 दिवसीय ऑनलाइन प्रशिक्षण सम्पन्न

प्रशिक्षण शिविर के दौरान प्रतिभागियों को संबोधित करते वक्ता।

हिसार, 14 सितम्बर (ब्यूरो): बागवानी में विविधीकरण के रूप में मशरूम एक ऐसा व्यवसाय है जो कम पैसे से शुरू किया जा सकता है और सफल होने पर मशरूम उत्पादन को किसी भी स्तर पर बढ़ाया जा सकता है।

ये विचार चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय हिसार व एम.एच.यू., करनाल के कुलपति प्रो. समर सिंह ने कहे। वे एम.एच.यू. करनाल के क्षेत्रीय खुम्ब अनुसंधान केन्द्र मुरथल की ओर से राष्ट्रीय कृषि उच्च शिक्षा परियोजना के तहत आयोजित 3 दिवसीय ऑनलाइन प्रशिक्षण शिविर के समापन अवसर पर प्रतिभागियों को बतौर मुख्यातिथि ऑनलाइन संबोधित कर रहे थे। प्रशिक्षण खुम्ब उत्पादन, प्रोसैसिंग व विपणन को लेकर आयोजित किया गया। प्रो. समर सिंह ने कहा कि इस प्रशिक्षण कार्यक्रम के प्रतिभागी अधिक से अधिक लाभ उठाएं और अपनी समस्याओं का समाधान भी वैज्ञानिकों से प्राप्त करें।

मशरूम को टेबल फूड बनाने की जरूरत

प्रो. समर सिंह ने कहा कि मशरूम खाने में स्वादिष्ट होने के साथ-साथ पोषण से भरपूर है। इसलिए मौजूदा समय में मशरूम को एक टेबल फूड बनाने की जरूरत है, ताकि घर-घर तक इसका उपयोग हो सके। इसके अनेक प्रकार के व्यंजन व इसको परीक्षित भी किया जा सकता है। हमारे देश में अभी इसका उपयोग प्रति व्यक्ति बहुत ही कम है, जबकि नीदरलैंड व चीन में इसका उपयोग बहुत ज्यादा है।

फसल अवशेष का करें उचित प्रबंधन

एम.एच.यू. के विस्तार शिक्षा निदेशक डा. विजय अरोड़ा ने फसल अवशेष का उचित प्रबंध करने की आवश्यकता पर विशेष बल दिया। पराली को न जलाकर इसका उपयोग मशरूम के लिए कम्पोस्ट बनाने में किया जा सकता है। इससे वातावरण दूषित नहीं होगा, मिट्टी की उर्वरा शक्ति बढ़ेगी, उसमें सूक्ष्म जीव नष्ट नही होंगे। पराली न जलाने के लिए इसे एक सामाजिक अभियान के रूप में ग्रामीण क्षेत्र से जुड़े सभी वर्गों को इसमें योगदान देना होगा।

देशभर से 87 प्रतिभागी हुए शामिल

एम.एच.यू. के अनुसंधान निदेशक डा. रमेश गोयल ने बताया कि इस प्रशिक्षण शिविर में देशभर से 87 प्रतिभागियों ने हिस्सा लिया, जिनमें पंजाब, हरियाणा व पश्चिमी उत्तर प्रदेश के विद्यार्थी, युवा, किसान एवं उद्यमी शामिल थे। भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के मशरूम अनुसंधान निदेशालय, सोलन के वरिष्ठ वैज्ञानिकों डॉ. वी.पी. शर्मा, डॉ. श्वेत कमल, डॉ. सुधीर, डॉ. अनुपम, एन.आई.एफ.टी.ई.एम.ए., सोनीपत के वैज्ञानिक डॉ. अनुराग, राष्ट्रीय बागवानी बोर्ड के उपनिदेशक डॉ. सुरेंद्र सिंह व पंजाब कृषि विश्वविद्यालय, लुधियाना के वैज्ञानिक डॉ. शिवानी ने मशरूम से जुड़े विभिन्न विषयों पर अपने व्याख्यानों से प्रतिभागियों को अवगत करवाया व विस्तारपूर्वक जानकारी दी।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम....दैनिक भास्कर....

दिनांक 15.9.2020 पृष्ठ संख्या 2 कॉलम 6:8

कम लागत में अधिक मुनाफा देता है मशरूम : प्रो. समर

भास्कर न्यूज़ | हिसार

मशरूम एक ऐसा व्यवसाय है, जो कम पैसे से शुरू किया जा सकता है और सफल होने पर मशरूम उत्पादन को किसी भी स्तर पर बढ़ाया जा सकता है। ये विचार चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय हिसार व एमएचयू करनाल के कुलपति प्रो. समर सिंह ने कहे। वे एमएचयू करनाल के क्षेत्रीय खुम्ब अनुसंधान केन्द्र मुरथल की ओर से राष्ट्रीय कृषि उच्च शिक्षा परियोजना के तहत आयोजित तीन दिवसीय ऑनलाइन प्रशिक्षण शिविर के समापन पर प्रतिभागियों को बतौर मुख्यातिथि ऑनलाइन संबोधित कर रहे थे। प्रशिक्षण खुम्ब उत्पादन, प्रोसेसिंग व विपणन को लेकर आयोजित किया गया। प्रो. समर सिंह ने कहा कि इस प्रशिक्षण कार्यक्रम के प्रतिभागी अपनी समस्याओं का समाधान वैज्ञानिकों से प्राप्त करें।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम......अमर उजाला......

दिनांक 15.9.2020 पृष्ठ संख्या......4...... कॉलम......7-8......

'कम लागत में अधिक मुनाफा देता है मशरूम'

हिसार। बागवानी में विविधीकरण के रूप में मशरूम एक ऐसा व्यवसाय है जो कम लागत में शुरू किया जा सकता है और सफल होने पर मशरूम उत्पादन को किसी भी स्तर पर बढ़ाया जा सकता है। यह बात हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय हिसार व एमएचयू करनाल के कुलपति प्रो. समर सिंह ने कही। वे एमएचयू करनाल के क्षेत्रीय खुम्ब अनुसंधान केंद्र मुरथल की ओर से आयोजित तीन दिवसीय ऑनलाइन प्रशिक्षण शिविर के समापन अवसर पर प्रतिभागियों को बतौर मुख्यातिथि ऑनलाइन संबोधित कर रहे थे। उन्होंने कहा कि मशरूम के उत्पादन, विपणन व भंडारण बारे में भी अधिक से अधिक जानकारी हासिल कर अपना स्वरोजगार स्थापित करें।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम हिसार टुडे
दिनांक 14.9.2020 पृष्ठ संख्या — कॉलम —

कम लागत में अधिक मुनाफा देता है मशरूम : प्रोफेसर समर सिंह

मशरूम विषय पर तीन दिवसीय ऑनलाइन प्रशिक्षण सम्पन्न

टुडे न्यूज़ | हिसार

बागवानी में विविधीकरण के रूप में मशरूम एक ऐसा व्यवसाय है जो कम पैसे से शुरू किया जा सकता है और सफल होने पर मशरूम उत्पादन को किसी भी स्तर पर बढ़ाया जा सकता हैं।

ये विचार चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय हिसार व एमएचयू, करनाल के कुलपति प्रोफेसर समर सिंह ने कहे। वे एमएचयू करनाल के क्षेत्रीय खुम्ब अनुसंधान केन्द्र मुरथल की ओर से राष्ट्रीय कृषि उच्च शिक्षा परियोजना के तहत आयोजित तीन दिवसीय ऑनलाइन प्रशिक्षण शिविर के समापन अवसर पर प्रतिभागियों को बतौर मुख्यातिथि ऑनलाइन संबोधित कर रहे थे। प्रशिक्षण खुम्ब उत्पादन, प्रोसेसिंग व विपणन को लेकर आयोजित किया गया। इस प्रशिक्षण कार्यक्रम के प्रतिभागी अधिक से अधिक लाभ उठाएं और अपनी समस्याओं का समाधान भी वैज्ञानिकों से प्राप्त करें। साथ ही मशरूम के उत्पादन, विपणन व भंडारण बारे में भी अधिक से अधिक जानकारी हासिल कर अपना स्वरोजगार स्थापित करें। एमएचयू के कुलसचिव डा. अजय सिंह ने कुलपति का स्वागत किया और प्रशिक्षण के प्रतिभागियों को सफलतापूर्वक प्रशिक्षण हासिल करने

मशरूम को टेबल फूड बनाने की जरूरत

प्रोफेसर समर सिंह ने कहा कि मशरूम खाने में स्वादिष्ट होने के साथ-साथ सेहत के लिए भी बहुत फायदेमंद है व पोषण से भरपूर है। इसलिए मौजूदा समय में मशरूम को एक टेबल फूड बनाने की जरूरत है, ताकि घर-घर तक इसका उपयोग हो सके। इसके अनेक प्रकार के व्यंजन व इसको परिक्षित भी किया जा सकता है। हमारे देश में अभी इसका उपयोग प्रति व्यक्ति बहुत ही कम है, जबकि नीदरलैंड व चीन में इसका उपयोग बहुत ज्यादा है। उन्होंने प्रतिभागियों से आह्वान किया कि वे वर्तमान समय में विकसित नई प्रजातियों की जानकारी हासिल कर इस क्षेत्र में व्यवसाय स्थापित करें।

प्रशिक्षण शिविर के दौरान प्रतिभागियों को संबोधित करते वक्ता।

फसल अवशेष का करें उचित प्रबंधन

एमएचयू के विस्तार शिक्षा निदेशक डा. विजय अरोड़ा ने फसल अवशेष का उचित प्रबंध करने की आवश्यकता पर विशेष बल दिया। पराली को न जलाकर इसका उपयोग मशरूम के लिए कम्पोस्ट बनाने में उपयोग किया जा सकता है। इससे वातावरण दूषित नहीं होगा, मिट्टी की उर्वरा शक्ति बढ़ेगी, मिट्टी में सूक्ष्म जीवी नष्ट नही होगें। पराली न जलाने के लिए इसे एक सामाजिक अभियान के रूप में ग्रामीण क्षेत्र से जुड़े सभी वर्गों को इसमें योगदान देना होगा।

देशभर से 87 प्रतिभागी हुए शामिल

एमएचयू के अनुसंधान निदेशक डा. रमेश गोयल ने बताया कि इस प्रशिक्षण शिविर में देशभर से 87 प्रतिभागियों ने हिस्सा लिया, जिनमें पंजाब, हरियाणा व पश्चिमी उत्तर प्रदेश के विद्यार्थी, युवा, किसान एवं उद्यमी शामिल थे। भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के मशरूम अनुसंधान निदेशालय, सोलन के वरिष्ठ वैज्ञानिकों डॉ. वी.पी. शर्मा, डॉ. श्वेत कमल, डॉ. सुधीर, डॉ. अनुपम, एनआईएफटीईमए, सोनीपत के वैज्ञानिक डॉ. अनुराग, राष्ट्रीय बागवानी बोर्ड के उपनिदेशक डॉ. सुरेंद्र सिंह व पंजाब कृषि विश्वविद्यालय, लुधियाना के वैज्ञानिक डॉ. शि गनी ने मशरूम से जुड़े विभिन्न विषयों पर अपने व्याख्यानों से प्रतिभागियों को अवगत करवाया व मशरूम के बारे में विस्तारपूर्वक जानकारी दी। इस के अलावा प्रतिभागियों को मशरूम उद्योग, उसके उत्पादन, नई तकनीक, नई प्रजातियों, मशरूम फार्म डिजाइन आदि के बारे में बेहतरीन ढंग से जानकारी मुहैया करवाई। साथ ही प्रशिक्षण में वैज्ञानिकों ने प्रतिभागियों के साथ प्रशिक्षण संबंधी उनके अनुभवों को लेकर विचार-विमर्श भी किया।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम .... पाँच बजे ....

दिनांक 14-9-2020 पृष्ठ संख्या — कॉलम —

हकृवि में मशरूम विषय पर तीन दिवसीय ऑनलाइन प्रशिक्षण सम्पन्न

कम लागत में अधिक मुनाफा देता है मशरूम : प्रो. समर सिंह

पांच बजे न्यूज

हिसार। बागवानी में विविधीकरण के रूप में मशरूम एक ऐसा व्यवसाय है जो कम पैसे से शुरू किया जा सकता है और सफल होने पर मशरूम उत्पादन को किसी भी स्तर पर बढ़ाया जा सकता है। ये विचार चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय हिसार व एमएचयू, करनाल के कुलपति प्रोफेसर समर सिंह ने कहे। वे एमएचयू करनाल के क्षेत्रीय खुम्ब अनुसंधान केन्द्र मुरथल की ओर से राष्ट्रीय कृषि उच्च शिक्षा परियोजना के तहत आयोजित तीन दिवसीय ऑनलाइन प्रशिक्षण शिविर के समापन अवसर पर प्रतिभागियों को बतौर मुख्यातिथि ऑनलाइन संबोधित कर रहे थे। प्रशिक्षण खुम्ब उत्पादन, प्रोसेसिंग व विपणन को लेकर आयोजित किया गया। प्रोफेसर समर सिंह ने कहा कि इस प्रशिक्षण कार्यक्रम के प्रतिभागी अधिक से अधिक लाभ उठाएं और अपनी समस्याओं का समाधान भी वैज्ञानिकों से प्राप्त करें। साथ ही मशरूम के उत्पादन, विपणन व भंडारण बारे में भी अधिक से अधिक जानकारी हासिल कर अपना स्वरोजगार स्थापित करें। एमएचयू के कुलसचिव डा. अजय सिंह ने कुलपति का स्वागत किया और प्रशिक्षण के प्रतिभागियों को सफलतापूर्वक प्रशिक्षण हासिल करने पर बधाई दी।

मशरूम को टेबल फूड बनाने की जरूरत

प्रोफेसर समर सिंह ने कहा कि मशरूम खाने में स्वादिष्ट होने के साथ-साथ सेहत के लिए भी बहुत फायदेमंद है व पोषण से भरपूर है। इसलिए मौजूदा समय में मशरूम को एक टेबल फूड बनाने की जरूरत है, ताकि घर-घर तक इसका उपयोग हो सके। इसके अनेक प्रकार के व्यंजन व इसको परिक्षित भी किया जा सकता है। हमारे देश में अभी इसका उपयोग प्रति व्यक्ति बहुत ही कम है, जबकि नीदरलैंड व चीन में इसका उपयोग बहुत ज्यादा है। उन्होंने प्रतिभागियों से आह्वान किया कि वे वर्तमान समय में विकसित नई प्रजातियों की जानकारी हासिल कर इस क्षेत्र में व्यवसाय स्थापित करें।

फसल अवशेष का करें उचित प्रबंधन

एमएचयू के विस्तार शिक्षा निदेशक डा. विजय अरोड़ा ने फसल अवशेष का उचित प्रबंध करने की आवश्यकता पर विशेष बल दिया। पराली को न जलाकर इसका उपयोग मशरूम के लिए कम्पोस्ट बनाने में उपयोग किया जा सकता है। इससे वातावरण दूषित नहीं होगा, मिट्टी की उर्वरा शक्ति बढ़ेगी, मिट्टी में सूक्ष्म जीवी नष्ट नहीं होगें। पराली न जलाने के लिए इसे एक सामाजिक अभियान के रूप में ग्रामीण क्षेत्र से जुड़े सभी वर्गों को इसमें योगदान देना होगा।

देशभर से 87 प्रतिभागी हुए शामिल

एमएचयू के अनुसंधान निदेशक डा. रमेश गोयल ने बताया कि इस प्रशिक्षण शिविर में देशभर से 87 प्रतिभागियों ने हिस्सा लिया, जिनमें पंजाब, हरियाणा व पश्चिमी उत्तर प्रदेश के विद्यार्थी, युवा, किसान एवं उद्यमी शामिल थे। भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के मशरूम अनुसंधान निदेशालय, सोलन के वरिष्ठ वैज्ञानिकों डॉ. वी.पी. शर्मा, डॉ. श्वेत कमल, डॉ. सुधीर, डॉ. अनुपम, एनआईएफटीईमए, सोनीपत के वैज्ञानिक डॉ. अनुराग, राष्ट्रीय बागवानी बोर्ड के उपनिदेशक डॉ. सुरेंद्र सिंह व पंजाब कृषि विश्वविद्यालय, लुधियाना के वैज्ञानिक डॉ. शिवानी ने मशरूम से जुड़े विभिन्न विषयों पर अपने व्याख्यानों से प्रतिभागियों को अवगत करवाया व मशरूम के बारे में विस्तारपूर्वक जानकारी दी। इसके अलावा प्रतिभागियों को मशरूम उद्योग, उसके उत्पादन, नई तकनीक, नई प्रजातियों, मशरूम फार्म डिजाइन आदि के बारे में बेहतरीन ढंग से जानकारी मुहैया करवाई। साथ ही प्रशिक्षण में वैज्ञानिकों ने प्रतिभागियों के साथ प्रशिक्षण संबंधी उनके अनुभवों को लेकर विचार-विमर्श भी किया।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम....नित्य शक्ति टाइम्स....

दिनांक 14-9-2020 पृष्ठ संख्या.....—..... कॉलम.....—.....

कम लागत में अधिक मुनाफा देता है मशरूम : प्रो. समर सिंह

मशरूम विषय पर तीन दिवसीय ऑनलाइन प्रशिक्षण सम्पन्न

नित्य शक्ति टाइम्स न्यूज

हिसार। बागवानी में विविधीकरण के रूप में मशरूम एक ऐसा व्यवसाय है जो कम पैसे से शुरू किया जा सकता है और सफल होने पर मशरूम उत्पादन को किसी भी स्तर पर बढ़ाया जा सकता हैं। ये विचार चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय हिसार व एमएचयू, करनाल के कुलपति प्रोफेसर समर सिंह ने कहे।

वे एमएचयू करनाल के क्षेत्रीय खुम्ब अनुसंधान केन्द्र मुरथल की ओर से राष्ट्रीय कृषि उच्च शिक्षा परियोजना के तहत आयोजित तीन दिवसीय ऑनलाइन प्रशिक्षण शिविर के समापन अवसर पर प्रतिभागियों को बतौर मुख्यातिथि ऑनलाइन संबोधित कर रहे थे। प्रशिक्षण खुम्ब उत्पादन, प्रोसेसिंग व विपणन को लेकर आयोजित किया

गया। प्रोफेसर समर सिंह ने कहा कि इस प्रशिक्षण कार्यक्रम के प्रतिभागी अधिक से अधिक लाभ उठाएं और अपनी समस्याओं का समाधान भी वैज्ञानिकों से प्राप्त करें। साथ ही मशरूम के उत्पादन, विपणन व भंडारण बारे में भी अधिक से अधिक जानकारी हासिल कर अपना स्वरोजगार स्थापित करें। एमएचयू के कुलसचिव डा. अजय सिंह ने कुलपति का स्वागत किया और प्रशिक्षण के प्रतिभागियों को सफलतापूर्वक प्रशिक्षण हासिल करने पर बधाई दी।

मशरूम को टेबल फूड बनाने की जरूरत : प्रोफेसर समर सिंह ने कहा कि मशरूम खाने में स्वादिष्ट होने के साथ-साथ सेहत के लिए भी बहुत फायदेमंद है व पोषण से भरपूर है। इसलिए मौजूदा समय में मशरूम को एक टेबल फूड बनाने की जरूरत है, ताकि घर-घर तक इसका उपयोग हो सके। इसके अनेक प्रकार के व्यंजन व इसको परिक्षित भी किया जा सकता है। हमारे देश में अभी इसका उपयोग प्रति व्यक्ति बहुत ही कम है, जबकि नीदरलैंड व चीन में इसका उपयोग बहुत ज्यादा है। उन्होंने प्रतिभागियों से आह्वान किया कि वे वर्तमान समय में विकसित नई प्रजातियों की जानकारी हासिल कर इस क्षेत्र में व्यवसाय स्थापित करें।

फसल अवशेष का करें उचित प्रबंधन

एमएचयू के विस्तार शिक्षा निदेशक डा. विजय अरोड़ा ने फसल अवशेष का उचित प्रबंध करने की आवश्यकता पर विशेष बल दिया। पराली को न जलाकर इसका उपयोग मशरूम के लिए कम्पोस्ट बनाने में उपयोग किया जा सकता है। इससे वातावरण दूषित नहीं होगा, मिट्टी की उर्वरा शक्ति बढ़ेगी, मिट्टी में सूक्ष्म जीवी नष्ट नही होगें। पराली न जलाने के लिए इसे एक सामाजिक अभियान के रूप में ग्रामीण क्षेत्र से जुड़े सभी वर्गों को इसमें योगदान देना होगा।

देशभर से 87 प्रतिभागी हुए शामिल

एमएचयू के अनुसंधान निदेशक डा. रमेश गोयल ने बताया कि इस प्रशिक्षण शिविर में देशभर से 87 प्रतिभागियों ने हिस्सा लिया, जिनमें पंजाब, हरियाणा व पश्चिमी उत्तर प्रदेश के विद्यार्थी, युवा, किसान एवं उद्यमी शामिल थे। भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के मशरूम अनुसंधान निदेशालय, सोलन के वरिष्ठ वैज्ञानिकों डॉ. वी.पी. शर्मा, डॉ. श्वेत कमल, डॉ. सुधीर, डॉ. अनुपम, एनआईएफटीईमए, सोनीपत के वैज्ञानिक डॉ. अनुराग, राष्ट्रीय बागवानी बोर्ड के उपनिदेशक डॉ. सुरेंद्र सिंह व पंजाब कृषि विश्वविद्यालय, लुधियाना के वैज्ञानिक डॉ. शिवानी ने मशरूम से जुड़े विभिन्न विषयों पर अपने व्याख्यानों से प्रतिभागियों को अवगत करवाया व मशरूम के बारे में विस्तारपूर्वक जानकारी दी। इसके अलावा प्रतिभागियों को मशरूम उद्योग, उसके उत्पादन, नई तकनीक, नई प्रजातियों, मशरूम फार्म डिजाइन आदि के बारे में बेहतरीन ढंग से जानकारी मुहैया करवाई।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम........नभ: छोर........

दिनांक 14.9.2020...पृष्ठ संख्या.....—.....कॉलम.....—.....

मशरूम को टेबल फूड बनाने की आवशकता : कुलपति

हिसार/14 सितंबर/रिपोर्टर

बागवानी में विविधीकरण के रूप में मशरूम एक ऐसा व्यवसाय है जो कम पैसे से शुरू किया जा सकता है और सफल होने पर मशरूम उत्पादन को किसी भी स्तर पर बढ़ाया जा सकता हैं। ये विचार चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय हिसार व एमएचयू, करनाल के कुलपति प्रोफेसर समर सिंह ने कहे। वे एमएचयू करनाल के क्षेत्रीय खुम्ब अनुसंधान केन्द्र मुरथल की और से राष्ट्रीय कृषि उच्च शिक्षा परियोजना के तहत आयोजित तीन दिवसीय ऑनलाइन प्रशिक्षण शिविर के समापन अवसर पर प्रतिभागियों को बतौर मुख्यातिथि ऑनलाइन संबोधित कर रहे थे। उन्होंने कहा कि इस प्रशिक्षण कार्यक्रम के प्रतिभागी अधिक से अधिक लाभ उठाएं और अपनी समस्याओं का समाधान भी वैज्ञानिकों से प्राप्त करें। साथ ही मशरूम के उत्पादन, विपणन व भंडारण बारे में भी अधिक से अधिक जानकारी हासिल कर अपना स्वरोजगार स्थापित करें। प्रोफेसर सिंह ने कहा कि मशरूम खाने में स्वादिष्ट होने के साथ-साथ सेहत के लिए भी बहुत फायदेमंद है व पोषण से भरपूर है। इसलिए मौजूदा समय में मशरूम को एक टेबल फूड बनाने की जरूरत है, ताकि घर-घर तक इसका उपयोग हो सके। इसके अनेक प्रकार के व्यंजन व इसको परिरक्षित भी किया जा सकता है। हमारे देश में अभी इसका उपयोग प्रति व्यक्ति बहुत ही कम है, जबकि नीदरलैंड व चीन में इसका उपयोग बहुत ज्यादा है। उन्होंने प्रतिभागियों से आह्वान किया कि वे वर्तमान समय में विकसित नई प्रजातियों की जानकारी हासिल कर इस क्षेत्र में व्यवसाय स्थापित करें।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम दैनिक भास्कर करनाल

दिनांक 15.9.2021 पृष्ठ संख्या — कॉलम —

कम लागत में अधिक मुनाफा देता है मशरूम : प्रो. समर

करनाल। बागवानी में विविधिकरण के रूप में मशरूम एक ऐसा व्यवसाय है जो कम पैसे से शुरू किया जा सकता है और सफल होने पर मशरूम उत्पादन को किसी भी स्तर पर बढ़ाया जा सकता है।

यह बातें महाराणा प्रताप बागवानी विश्वविद्यालय करनाल के कुलपति प्रोफेसर समर सिंह ने कही। वे विश्वविद्यालय के क्षेत्रीय खुम्ब अनुसंधान केन्द्र मुरथल की ओर से राष्ट्रीय कृषि उच्च शिक्षा परियोजना के तहत आयोजित तीन दिवसीय ऑनलाइन प्रशिक्षण शिविर के समापन अवसर पर प्रतिभागियों को बतौर मुख्यातिथि ऑनलाइन संबोधित कर रहे थे। यह प्रशिक्षण शिविर खुम्ब उत्पादन, प्रोसेसिंग व विपणन को लेकर आयोजित किया गया। प्रोफेसर समर सिंह ने कहा कि इस प्रशिक्षण कार्यक्रम के प्रतिभागी अधिक से अधिक लाभ उठाएं और अपनी समस्याओं का समाधान भी वैज्ञानिकों से प्राप्त करें, साथ ही मशरूम के उत्पादन, विपणन व भंडारण बारे में भी अधिक जानकारी हासिल कर अपना स्वरोजगार स्थापित करें।